डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया

B.A. Part-1
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper-1

Date: 07-02-2024

Page No.
Date

'सुनतहि राजा गा मुरछाई...' प्रेमखंड (पद्मावत)

सुनतहि राजा गा मुरछाई।
जानौं लहरि सुरुज कै आई॥
प्रेम घाव दुख जान न कोई।
जेहि लागै जानै तै सोई॥
परा सो पेम समुद्र अपारा।
लहरहिं लहर होइ बिसँभारा॥
बिरह भौंर होइ भाँवरि देई।
खिन खिन जीउ हिलोरा लेई॥
खिनहिं उसास बूड़ि जिउ जाई।
खिनहि उठे निसरै बौराई॥
खिनहिं पीत, खिन होइ मुख सेता।
खिनहिं चेत, खिन होइ अचेता॥
कठिन मरन तें प्रेम-बेवस्था।
ना जिउ जियै, न दसवँ अवस्था॥

जनु लेनिहार न लेहिं जिउ, हरहिं तरासहिं ताहिं।
एतनै बोल आव मुख, करै तराहि तराहि॥

शब्दार्थ —

- बिसँभरा = बेसुध,
- दसवँ अवस्था = मरण,
- लेनिहार = प्राण लेने वाला,
- हरहिं = धीरे-धीरे,
- तरासहि = त्रास दिखाते हैं।

व्याख्या —

पदमावती के रूप सौंदर्य का वर्णन सुनकर राजा रत्नसेन उसके प्रेम में खो जाता है। अर्थात् मूर्च्छित हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे लू लग गई हो या किसी बड़े रोग से ग्रसित हो गए है। कवि कहता है कि प्रेम के दर्द को वही समझ सकता है जो प्रेम में चोट खाया हो। प्रेम की चोट खाकर राजा रतनसेन प्रेम के अथाह सागर में गिर गया था और प्रेम की लहर आने पर बेसुध हो गया था। विरह रतनसेन को भंवर की भाँति घुमा रहा था इसलिए उसके प्राण हिल्लोल लेकर मथे जा रहे थे। पल में ही विरह के उसाँसों से उसके प्राण डूब जाते थे तथा पल में ही उठकर पागलों के भाँति भागना चाहते थे। रतनसेन का मुख पल में ही पीला तथा पल में ही श्वेत हो जाता था। वह पल में ही होश में आ जाता था और पल में ही अचेत हो जाता था। प्रेम का विरहावस्था मृत्यु से भी कठिन होता है क्योंकि ऐसी दशा में न तो प्राण जीवित अवस्था में रहते हैं और न मृत्यु ही होती है।

राजा रतनसेन की ऐसी दशा देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो प्राणों को हरने वाला यमराज के दूत प्राण का

इतना नहीं उनके विरुद्ध उन्हें मारने, पीटने आदि
जैसे कठोर पीड़ा पहुँचाते हैं। ऐसी परिस्थिति में
उनको भारत से भागने - भागने का आदेश दे
विवश रहना पड़ा।